ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 6 June 2021

# आधुनिक हिन्दी काव्य में स्वच्छन्दतावाद का स्वरूप एवं विकास - एक अनुसंधानात्मक अध्ययन

डॉ.जार्ज जोसफ
सह प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, क्राइस्ट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी),बेंगलुरु-29, कर्नाटक, भारत |

**सारांश:** *आधुनिक हिन्दी साहित्य में 'स्वच्छन्दतावाद' शब्द का प्रयोग अंग्रेज़ी साहित्य के 'रोमांटिसिज़म' के समानार्थी रूप में किया जाता है | किन्तु दोनों के स्वरुप में काफी अंतर है |.पश्चिम में रोमांटिसिज़म यानी साहित्य आंदोलन केवल काव्य तक सीमित नहीं रहा | पर हिन्दी में स्वच्छन्दतावाद का पूर्ण उत्कर्ष काव्य में ही हुआ , यद्यपि नाटक , उपन्यास और कहानियों को भी उसने प्रभावित किया 'स्वच्छन्द' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के विशेषण 'स्व' तथा धातु 'छन्द' के संयोग से हुई है | 'स्व' का अर्थ है स्वयं की एवं 'छन्द' का अर्थ है 'इच्छा'| इस प्रकार दो शब्द के योग (स्व+ छन्द) से निष्पन्न इस शब्द का अर्थ है 'स्वेच्छानुसार '(According to one's own free will) हिन्दी में भी स्वच्छन्द शब्द इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है | इस विशेषण से 'ता' प्रत्यय जोड़कर इसकी भाववाचक संज्ञा शब्द 'स्वच्छन्दता' बन जाती है | इसका कोशगत अर्थ है स्वतंत्रता या स्वाधीनता | स्वच्छन्दतावाद हिन्दी का मूल शब्द न होने के कारण शायद हिन्दी के प्रामाणिक शब्द कोशों में इसका उल्लेख नहीं हुआ है | किंतु १९५५ में प्रकाशित श्री राजेंद्र द्विवेदी द्वारा प्रणीत 'साहित्यशास्त्र का पारिभाषिक शब्द-कोश' में यह शब्द पाया जाता है | यहाँ भी इसका प्रयोग हिन्दी साहित्य के वाद के रूप में नहीं , बल्कि यूरोपीय साहित्य की काव्य -धारा के रूप में ही हुआ है |*

**मूल शब्द:** स्वच्छन्दतावाद, साम्राज्यवाद, मानवतावाद, परम्परावाद,काव्यवृत्ति

**प्रस्तावना:** हिंदी साहित्य में 'स्वच्छन्दतावाद' शब्द का प्रयोग प्रथमतः आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा हुआ है | उनके 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में स्वच्छन्दतावाद शब्द के स्थान पर 'स्वच्छन्दधारा' शब्द का प्रयोग किया गया है | इसका तात्पर्य 'रोमांटिसिज़म' ही है | उनके अनुसार " इंग्लैण्ड के लिए स्वच्छन्दतावाद (Romanticism) का नाम इधर हिन्दी में बराबर लिया जा रहा है उसके प्रारंभिक उत्थान के भीतर परिवर्तन के मूल प्राकृतिक आधार का स्पष्ट आभास रहा है | "१ उन्होंने भी स्वच्छन्दतावाद को वाद के रूप में नहीं , किंतु कतिपय विशेषताओं से युक्त एक नयी काव्य धारा के रूप में देखा है और स्वच्छन्द रूप में रचना करनेवाले कवियों को स्वच्छन्द प्रकृति के कवि बनाये हैं |

१. हिंदी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचंद्र शुक्ल - पृष्ट ५५४

स्वच्छन्द रूप का अर्थ प्रकृति का स्वतंत्र रूप में वर्णन और परम्पराजत छंद, अलंकार आदि से स्वतंत्र होकर काव्य शैली में प्रयोग | शुक्ल ने इस दृष्टि से श्रीधर पाठक को हिन्दी में स्वच्छन्दतावाद का प्रवर्तक कहा है तथा माखनलाल चतुर्वेदी, सियारामशरणगुप्त, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' बच्चन, दिनकर, गुरुभक्त सिंह, उदयशंकर भट्ट आदि को भी इस धारा के कवि बताये हैं |

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 6 June 2021

हिंदी साहित्य में स्वच्छन्दतावादी चिंतन का स्वरुप एवं विकास युगीन परिवेश से सम्बंधित है | यह वह युग था जिसमे सर्वत्र क्रांति का बोलबाला था | सम्पूर्ण राष्ट्र का मनोबल बहुत ऊँचा था | सशक्त मनोबल से युक्त यह क्रांति अंग्रेज़ी साम्राज्यवाद के विरुद्ध राष्ट्रीय लोकतंत्र केलिए प्रयत्नशील थी | राष्ट्रीय लोकतंत्र अर्थ भारतीय संस्कृति का पुनरुद्धार था | यह क्रांति गांधीवादी नैतिक मूल्यों से संचालित होने के कारण धर्म और मानवतावाद से समन्वित थी | अतः सम्पूर्ण राष्ट्रीय चिंतन उदारपंथी विचारों से प्रभावित था | इतना होते हुए भी हम भारत की स्वाधीनता का सम्पूर्ण श्रेय इस उदारपंथियों को नहीं दे सकते ;क्योंकि उस समय एक और वाम पक्षीय दाल भी था , जो उग्र राजनीतिक सिद्धांतों से विश्वास करता था | इस दल के नेते थे तिलक, लाला लजपतराय, और सुभाष चंद्रबोस जैसे क्रांतिकारी व्यक्ति |

यह दल पंजाब से लेकर बंगाल तक समस्त देश में लोकप्रिय एवं सक्रिय था | दल ने भी भारतीय संस्कृति के तत्वों को स्वीकार किया | किन्तु इनके सभी कार्य वीर भावना से युक्त थे | गीता का कर्म सन्देश इनके सिद्धांतों का मूल आधार बना | वैदिक संस्कृति के प्रति सम्पूर्ण निष्ठा रखते हुए देशोद्धार में अपना अमूल्य सहयोग दिया | स्वाथीनता संग्राम का राष्ट्रीय रूप सर्व प्रथम हमें बंगाल में मिलता है | इसकी चेतना हिंदी प्रदेश में भी पायी जाती है | सम्पूर्ण राष्ट्र संवेदनशील एवं जागरूक होने के कारण एकदम स्वतंत्रता केलिए उठवला हो उठा था | इस प्रकार की मानसिक क्रांति हिंदी साहित्य के स्वच्छन्दतावादी आंदोलन की भूमिका रही है | किंतु साहित्य के क्षेत्र में प्रधम विश्वयुद्ध के पश्चात् १९२० के लगभग राष्ट्रीय संवेदना धर्म एवं नीति प्रधान न होकर मानवतावाद की ओर उन्मुख हो रही थी | यह छायावादी काव्य चिंतन के भूमिका - निर्माण का समय माना गया ओर इसी समय से मानव के ह्रदय स्थित घनीभूत मानव चेतना की अभिव्यक्ति के निमित्त संस्कृत गर्भित खड़ीबोली का प्रयोग आरम्भ हुआ | सारांशतः खड़ीबोली राष्ट्रीय चेतना युक्त भावों को व्यक्त करने का साधन बनी | वैसे स्वच्छन्दतावादी साहित्य चिंतन युगीन राष्ट्रीय दृष्टिकोण के अनुसार ही विकसित हुआ |

हिन्दी स्वच्छन्दतावाद का आविर्भाव जिन परिस्थितियों में हुआ तथा जिन प्रवृत्तियों को आत्मसात करते हुए उसकी संरचना हुई, उन विशेषताओं के आधार पर हिन्दी के प्रसिद्ध समालोचकों ने उसको इसप्रकार परिभाषित किया है | डॉ. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने स्वच्छन्दतावाद को व्यक्तित्व प्रधान साहित्य मानते हुए कल्पना और आवेश को उसकी केंद्र प्रवृत्तियाँ माना है | उनका विचार है - " रोमांटिक साहित्य की वास्तविक उत्स भूमि वह मानसिक गठन है जिसमे कल्पना के अविरल प्रवाह से घन संश्लिष्ट -निबिड़ आवेग की ही प्रधानता होती है | इस प्रकार कल्पना का अविरल प्रवाह ओर निबिड़ आवेग - वे दो निरंतर घनीभूत मानसिक वृत्तियाँ ही इस व्यक्तिप्रधान साहित्यिक रूप की प्रधान जननी है |" २ उनकी इस परिभाषा में प्रकृति प्रेम, रहस्यात्मकता,उन्मुक्त प्रेम आदि की व्यंजना नहीं है जो स्वच्छन्दतावाद की प्रमुख विशेषताएँ हैं |

आधुनिक हिन्दी स्वच्छन्दतावादी काव्य धारा का विकास क्रम इस प्रकार है - पहला स्वच्छन्दतावादी काव्य धारा का प्रथम उत्थान, दूसरा द्वितीय उत्थान ओर तीसरा स्वच्छन्दतावादी काव्य धारा का तृतीय सोपान |

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 6 June 2021

**प्रथम उत्थान** - हिन्दी में स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्ति का संकेत भारतेन्दु युग से ही देखने को मिलता है | इस युग में हिन्दी कविता मध्ययुगीन पौराणिक वातावरण से नवीनता की ओर अग्रसर होने का प्रयास कर रही थी | प्रथम उत्थान के अंतर्गत ठाकुर जगमोहन सिंह ओर श्रीधर पाठक का नाम उल्लेखनीय हैं | ठाकुर जगमोहन सिंह के काव्य के सम्बन्ध में पं. रामचंद्र शुक्ल की धारणा है कि यद्यपि ठाकुर जगमोहन सिंह जी अपनी कविता को नए विषयों की ओर नहीं ले गए, पर प्राचीन संस्कृत काव्यों के प्राकृतिक वर्णनों का संस्कार मन में लिए हुए, प्रेम चर्चा की मधुर-स्मृति से समन्वित विन्ध्य प्रदेश के रमणीक स्थानों को जिस सच्चे अनुराग की दृष्टि से उन्होंने देखा है, वह ध्यान देने योग्य है | उसके द्वारा उन्होंने हिन्दी काव्य में एक नूतन विधान का आभास दिया था |

काव्य का व्यक्तिवाद जो स्वच्छन्दतावादी काव्य धारा का प्राण है, वह भारतेन्दु युग में केवल ठाकुर जगमोहन सिंह के काव्यों में मिलता है |प्रेम परक श्रृंगारी काव्यों के द्वारा उन्होंने संयोग - वियोग का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है | संस्कृत काव्य की परंपरा को अपनाकर प्रकृति चित्रण में उन्होंने नयी दिशा दी | इसके अलावा दुखवाद की भावनाएँ उनके साहित्य में उपलब्ध होती हैं |भाषा एवं छंद आदि के सम्बन्ध में ठाकुर साहेब के काव्यों में स्वच्छन्दतावादी प्रेरक स्थितियाँ उत्पन्न हो गयी थी | इसप्रकार उन्होंने हिन्दी के परम्परावादी काव्य को स्वच्छन्दतावादी बनाने में सफल प्रयास किया है |

पंडित श्रीधर पाठक का प्रादुर्भाव भारतेन्दु युग तथा द्विवेदी युग के संधिकाल में हुआ | वे स्वच्छन्दतावादी काव्य के अग्रदूत हैं | पाठक जी के कृतित्व के साथ हिन्दी की काव्य २.डॉ. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी - रोमांटिक साहित्य शास्त्र की भूमिका - पृष्ट २

भाषा में एक भारी परिवर्तन आया | उन्होंने व्रज भाषा की अपेक्षा खड़ीबोली में ही अधिकतर काव्य रचनाएँ प्रस्तुत की | वास्तव में पाठक जी के समक्ष भाषा तथा विषयवस्तु दोनों की समस्या थी | एक सर्वसाधारण विषयवस्तु को ग्रहण कर उसे भावुकता के संस्पर्श के साथ खड़ीबोली में अंकन करने का सर्वप्रथम श्रेय पाठक जी को ही है | एक ओर जहाँ पाठक जी ने पाश्चात्य कथा काव्यों के भारतीय संस्करण प्रस्तुत किये थे , वहाँ दूसरी ओर उन्होंने हिन्दी काव्य जगत में नवीन भावनाओं तथा काल्पनिक बिम्बों को सूंदर अभिव्यंजना दी | उनका सम्पूर्ण काव्य साहित्य स्वच्छन्दतावादी विचार धारा एवं भावनाओं से ओतप्रोत है | स्वच्छन्द प्रेम भावना, स्वातंत्र्य के प्रति अनुराग, पर्यटक भावना की ललक , प्रकृति के प्रति अपार मोह , काव्य शिल्प का नवीन प्रयोग आदि स्वच्छन्दतावादी विशेषताओं का उन्होंने अपने काव्य में समावेश किया |

पाठक जी के काव्य की उक्त विशेषताओं को दृष्टि में रखकर शुक्लजी ने उन्हें "सच्चे स्वच्छन्दतावाद" का प्रवर्तक मान लिया | समय की दृष्टि से उन्हें भाषा क्षेत्र में भी आशातीत सफलता मिली | उन्होंने भाषा प्रयोग , शब्दों के चुनाव में प्रौढ़ कलात्मकता दिखाई | इस प्रकार वे एक बड़े प्रतिभाशाली , भावुक और सुरुचिसंपन्न कवि थे |

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 6 June 2021

इनके अतिरिक्त प्रथम उत्थान में पं. बदरीनारायण भट्ट, मुकुटधर पांडेय, माखनलाल चतुर्वेदी, सियाराम शरण गुप्त, सुभद्रा कुमारी चौहान, ठाकुर गुरुभक्त सिंह आदि कवियों ने विशेष योगदान दिया है | पं. बदरीनाथ भट्ट ने भावात्मक गीतों की रचना की तो श्री मुकुटधर पांडेय ने अपनी रचना में प्रकृति के प्रति अपार स्नेह तथा भाषा की चित्रात्मकता का निर्माण किया | माखनलाल जी की कविताओं में अनन्य देश प्रेम की झाँकी मिलती है |इस प्रकार ये कवि स्वछंद रूप से अपनी भावनाओं को नयी भाषा (खड़ीबोली) में अभिव्यक्त करते थे | इनमे अंतर्मुखी प्रवृत्ति की अपेक्षा बहुमुखी प्रवृत्ति ही अधिक थी | एक दृष्टि से स्वच्छन्दतावादी काव्य धारा का विकास बहुत कुछ स्वतंत्र एवं स्वाभाविक रूप से हुआ |

विकास की दृष्टि से यहाँ तक की स्वच्छन्दतावादी काव्य प्रवृत्ति को सैद्धांतिक स्वच्छन्दतावाद के नाम से अभिहित किया जा सकता है | इस समय का महत्वपूर्ण विषय यह है कि पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी अपने संस्कृत काव्य-संस्कारों के साथ हिन्दी काव्य क्षेत्र की गतिविधि को अत्यंत सतर्कता के साथ संभल रहे थे | एक प्रकार से इनके गंभीर व्यक्तित्व ने सच्चे तथा स्वाभाविक स्वच्छन्दतावादी काव्य धारा को रोक लगा दी | इनके संरक्षण में इतिवृत्तात्मक एवं सांस्कृतिक प्रबंध काव्य का विकास हुआ | ऐसे ही नीरस तथा विषय वास्तु प्रधान काव्य के विरुद्ध हिन्दी स्वच्छन्दतावाद के द्वितीय उत्थान का जन्म हुआ |

**द्वितीय उत्थान** - स्वच्छन्दतावादी काव्य धारा के द्वितीय उत्थान में स्वच्छन्दतावाद की सभी विशेषताओं का सुन्दर समावेश हुआ है | द्वितीय उत्थान के प्रतिनिधि हस्ताक्षर हैं - जयशंकर प्रसाद, पंत, निराला और महादेवी वर्मा | गुप्त जी के पश्चात् प्रसाद ने खड़ीबोली के काव्य प्रांगण में प्रवेश किया | सन १९१३ के पहले वे व्रज भाषा में कविताएँ लिखा करते थे ; परन्तु बाद में 'इन्दु' पत्रिका में उनके स्वच्छन्दतावादी मुक्तकों का प्रकाशन होने लगा | 'कानन कुसुम' खड़ीबोली में लिखी, उनकी प्रथम पुस्तक है जिसमे १९०९ -१७ तक की उनकी रचनाएँ संग्रहित हैं | इससे यह विषय भली भांति स्पष्ट ho जाता है कि प्रसाद जी खड़ीबोली के काव्य क्षेत्र में गुप्तजी के पश्चात अधिक विलम्ब से नहीं आये | सन १९२० तक उनके 'प्रेम पथिक', 'महाराणा का महत्व', तथा 'करुणालय' आदि खंडकाव्यों का प्रकाशन हुआ | इन रचनाओं में अतुकांत कविता को एक विशेष स्थान प्राप्त हुआ |

निराला और पंत का रचनाकाल सन १९१५-१७ से आरम्भ होता है | निराला जी की आरंभिक रचनाएँ सन १९१६ से ही प्रकाशित होती थी और 'मतवाला' में इनकी कविताएँ नियमित रूप से छपती थीं | पंत जी की 'वीणा' , 'ग्रंथि' आदि रचनाएँ सन १९२० तक प्रकाशित हो चुकी थी और सन १९२१ में 'उच्छवास' तथा 'आँसू' भी प्रकाशित हुई | प्रसाद जी ने युग और काव्य के सम्बन्ध को अच्छी तरह पहचाना था | समय की बदलती हुई जनता की मनोवृत्ति एवं अभिरुचि को दृष्टि में रखकर उन्होंने लिखा था - "सामयिक पाश्चात्य शिक्षा अनुकरण करके जो समाज के भाव बदल रहे हैं उनके अनुकूल कविताएँ नहीं मिलती और पुरानी कविता को पढ़ना तो महादोष -सा प्रतीत होता है , क्योंकि उस ढंग की कविताएँ तो बहुतायत से हो गयी हैं |"३ समय की दृष्टि से निसंदेह प्रसाद जी हिन्दी स्वच्छन्दतावाद के द्वितीय उत्थान के प्रवर्तक ठहरते हैं | प्रसाद ने स्वच्छन्दतावादी काव्य को नवीन

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 6 June 2021

स्वरुप दिया तो पंत ने अचिरकाल में ही स्वच्छन्दतावादी काव्य धरा को प्रौढ़ता और प्रांजलता प्रदान की |

सन १९२९ में निराला जी का 'परिमल' नामक काव्य संग्रह प्रकाशित हुआ जिसमें स्वच्छन्दतावाद की अनेक मुख्य विशेषताएँ पायी जाती हैं | सन १९३७ तक निराला जी की 'गीतिका' तथा 'अनामिका' का प्रकाशन हुआ | इस समय तक महादेवी जी की 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सांध्य-गीत' तथा 'दीपशिखा' आदि प्रसिद्ध काव्य - कृतियाँ प्रकाश में

३. मासिक 'इन्दु' सन १९१०:"कवि और कविता" नामक लेख से जयशंकर प्रसाद

आयीं | उनकी कविता में सीमा के बंधन में जकड़ी हुई असीम चेतना का क्रंदन मुखरित हुआ है | तदुपरांत निराला जी के 'कुकुरमुत्ता', 'अणिमा', 'बेला', 'नए पत्ते', 'अर्चना' , तथा 'आराधना' और पंत जी के 'युगांत' , 'युगवाणी' आदि काव्य संग्रहों का प्रकाशन हुआ ,जिनमे हिन्दी के स्वच्छन्दतावादी युग का अवसाद तथा नवीन युग का उदय स्पष्टतः देखा जा सकता है |

**तृतीय सोपान** - हिंदी की स्वच्छन्दतावादी काव्य धारा के इन चार महाकवियों के पश्चात उसकी गति मंद पड गयी | इस तरह स्वच्छन्दतावादी काव्य धारा ह्रासोन्मुख होती चली जा रही थी | इस काल के कवियों में डॉ. रामकुमार वर्मा , बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' , भगवतीचरण वर्मा , उदयशंकर भट्ट , नरेंद्र शर्मा , रामधारीसिंह 'दिनकर' , हरिवंशराय बच्चन , हरिकृष्ण प्रेमी , मोहनलाल महतो 'वियोगी' , जानकी वल्लभ शास्त्री , सुमित्राकुमारी सिन्हा तथा विद्यावती 'कोकिल' उल्लेखनीय हैं | रामकुमार वर्मा की 'अंजलि' , 'अभिशाप' , 'रूपराशि' , 'चित्र रेखा' , 'चंद्र किरण' तथा 'संकेत' स्वच्छन्दतावादी रचनाएँ हैं ,जिनमे कवि की रहस्यात्मक प्रवृत्ति , विरह वेदना ,प्रकृति सौंदर्य के प्रति असीम अनुराग प्रचुर मात्रा में मिलते हैं | बच्चन जी की आरंभिक कृतियों में तथा उनकी 'निशा -निमंत्रण' , 'एकांत संगीत' आदि रचनाओं में स्वच्छन्दतावादी झलक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है | उनकी कविता में मानव जीवन की आशा तथा निराशा का सफल चित्रण हुआ है | दिनकर जी की आरंभिक कृतियों में ( 'रेनू' से 'रसवंती' तक ) स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्ति एवं काव्य शैली भी अत्यंत स्पष्ट लक्षित होती हैं | इस प्रकार इन कवियों की कतिपय रचनाएँ स्वच्छन्दतावादी काव्य धारा की पोषक होती हुई भी अपनी उत्साह हीनता के कारण उस धारा की ह्रासोन्मुखता का संकेत देती हैं |

वास्तव में हिंदी स्वच्छन्दतावाद के ह्रास के कई अन्य कारण भी हैं | सन १९३६ से प्रसाद जी की असामयिक मृत्यु से इस काव्य धारा का एक महान स्तम्भ इस संसार से ही उठ गया | पंत और निराला भी समय की परिवर्तित समस्याओं को दृष्टि में रखकर प्रगतिवादी विचार धारा को अपनाने लगे | पंत जी का 'युगांत' स्वच्छन्दतावादी के अंत का सूचक है तो 'युगवाणी' तथा 'ग्राम्या' उनकी प्रगतिवादी दृष्टिकोण की परिचायिका हैं | निरालाजी की ' तोड़ती पत्थर ' , 'भिक्षुक' आदि कविताएँ उनकी प्रगतिशील चित्त वृत्ति को स्पष्ट करती हैं | समय की परिस्थितियों से प्रेरणा एवं शक्ति पाकर हिन्दी की प्रगतिवादी काव्य धारा चल पड़ी, जिसने स्वच्छन्दतावादी काव्य धारा का अंत किया |

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 6 June 2021

**सन्दर्भ:**

१. हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचंद्र शुक्ल - पृष्ट ५५४
२. रोमांटिक साहित्य शास्त्र की भूमिका - डॉ. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी - पृष्ट २
३. मासिक 'इन्दु' सन १९१० :"कवि और कविता" नामक लेख से जयशंकर प्रसाद
४. श्रीधर पाठक तथा हिंदी का पूर्व - स्वच्छन्दतावादी काव्य - डॉ. रामचंद्र मिश्र
५. आधुनिक काव्य की स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियाँ - डॉ. अजबसिंह
६. रोमांटिक साहित्य शास्त्र की भूमिका - देवराज उपाध्याय